विलक्षण मैटी

मार्गरेट ई. नाइट आविष्कारक कैसे बनीं

लेखन व चित्रः एमिली आरनल्ड मैक्कली

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

विलक्षण मैटी

मार्गरेट ई. नाइट आविष्कारक कैसे बनीं

लेखन व चित्रः एमिली आरनल्ड मैक्कली

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

लोवल मशीन शॉप के रिक रैन्डल और एमस्कैग मिल, मैनचैस्टर, न्यू हैम्पशर पुस्तकालय की आइलीन ओब्रायन को आभार।

-ई. ए. एम.

सभी काले सफेद चित्र एमिली आरनल्ड मैक्कली के बनाए हुए हैं, सिवा पेटेन्ट डिज़ाइन के।

अद्‌भुत सम्पादक मार्गरेट के लिए

मैटी नाइट यॉर्क, मेन के एक छोटे-सें घर में अपनी विधवा माँ और बड़े भाई चार्ली व जिम के साथ रहती थीं। वे लोग ग़रीब थे, पर मैटी को ग़रीबी का अहसास ही नहीं था। उसे विरासत में अपने पिता का एक टूल-बॉक्स (औज़ारों को डब्बा) मिला था। जब भी उसे लगता कि वह उन औज़ारों से किसी चीज़ को बना सकती है, वह अपनी उस कॉपी में पहले उसका चित्र बनाती जिस पर 'मेरे आविष्कार' लिखा हुआ था। उसके भाई उसके चित्रों को मैटी के 'दिमागी तूफ़ान' कहा करते थे।

मैटी ने चार्ली के लिए एक चकरी, जिम के लिए कूदता जैक बनाया। और अपनी माँ के लिए, जो परिवार का गुज़ारा चलाने के लिए सर्द रातों में भी देर तक सिलाई करती थी, उसने एक पैर-गरमा बनाया।
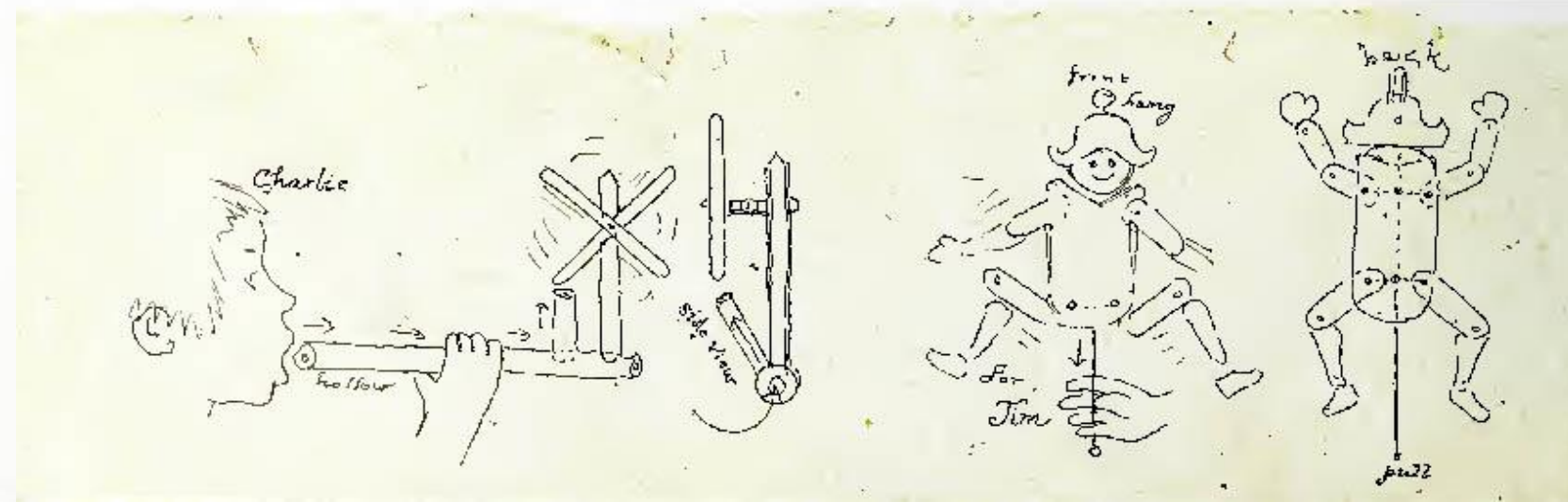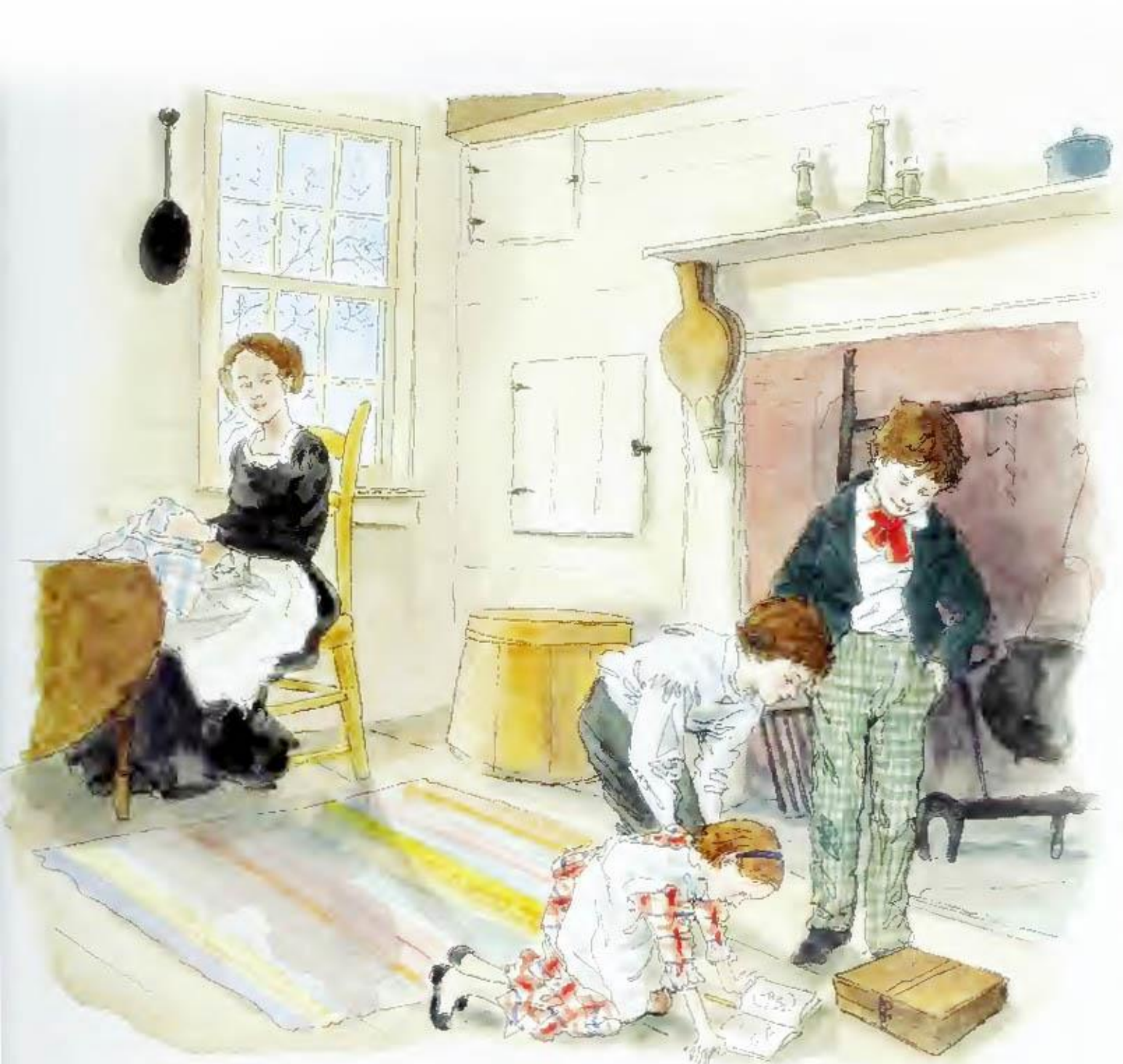
बसन्त में चार्ली और जिम ने कहा, "तुम हमारे लिए एक ख़ास पतंग नहीं बनाओगी?" मैटी ने अलग-अलग किस्म और आकारों की पतंगों के कई चित्र बनाए। तब उनमें से सबसे अच्छी पतंग चुनी और उस पर काम शुरु किया।

"मैटी अब क्या करने में जुटी है?" माँ ने जानना चाहा।

"उसे एक दिमागी-तूफ़ान आया है," लड़कों ने जवाब दिया। माँ ने सिर हिलाया। मैटी अजीब-सी लड़की है, उन्होंने सोचा। वह अपनी पेन्सिल, अपने चाकू (जो खटके के साथ खुलता था) और हथोड़े के साथ सबसे ज़्यादा खुश रहती है।
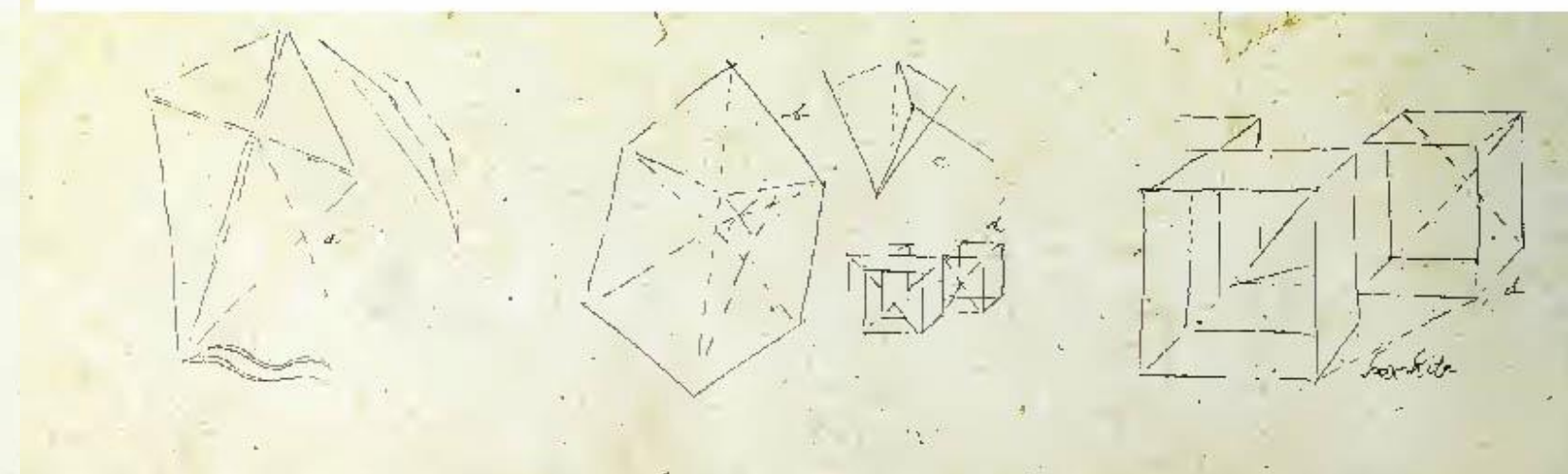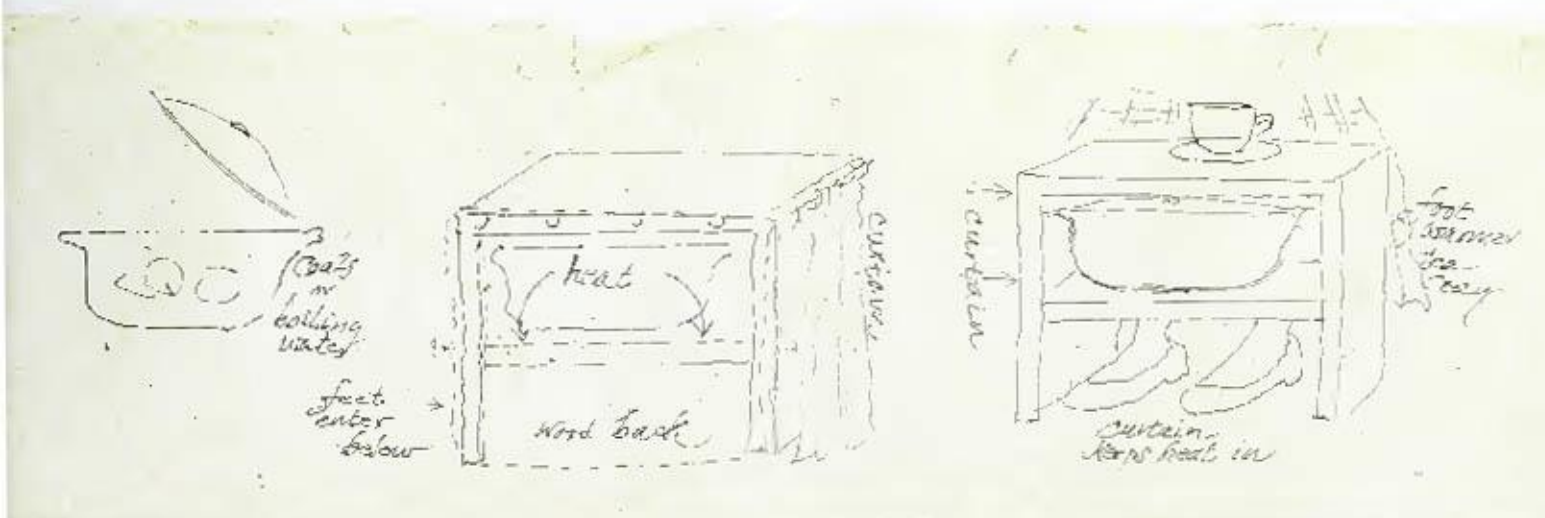
मैटी ओर उसके भाई तैयार पतंग को ले वार्ड हिल गए। जिम पतंग को ले हवा की उल्टी दिशा में दौड़ा।

“और तेज़,” मैटी ने कहा। पतंग हवा में कुछ फड़फड़ायी, कुछ नीचे उतरी तब हवा के तेज़ झोंके के साथ ऊपर उठी।

“याहू!” चार्ली चीखा। पतंग आसमान में ऊपर, और ऊपर चढ़ती गई।

“इसे बनाया किसने है?” मुहल्ले के कुछ लड़कों ने पूछा।

“मैटी ने!”

“यह हो ही नहीं सकता! कोई लड़की ऐसी पतंग बना ही नहीं सकती!”
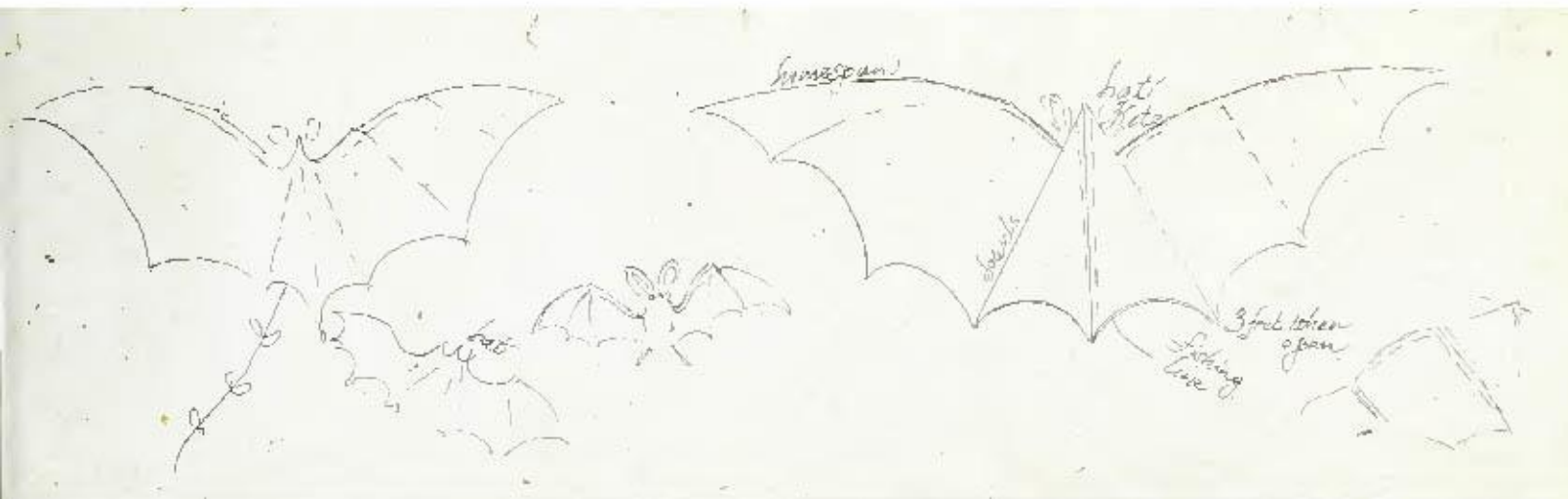
अगली सर्दियों में मैटी ने चार्ली और जिम के लिए स्लेज (बर्फ फिसलनी) बनाई। वे वार्ड हिल से नीचे फिसलने की हरेक रेस जीते। यह देख चार लड़कों ने मैटी से कहा कि वह उनके लिए भी स्लेज बना दे, ताकि वे भी रेस में शरीक हो सकें। “हरेक की क़ीमत एक क्वार्टर (पच्चीस सेंट) होगी,” मैटी ने शर्त रखी। लड़के मान गए। हर दोपहर स्कूल के बाद मैटी स्लेजों पर काम करने लगी। उसने ये पैसे अपनी माँ को दिए। पर मैटी का परिवार अब भी ग़रीब ही था।
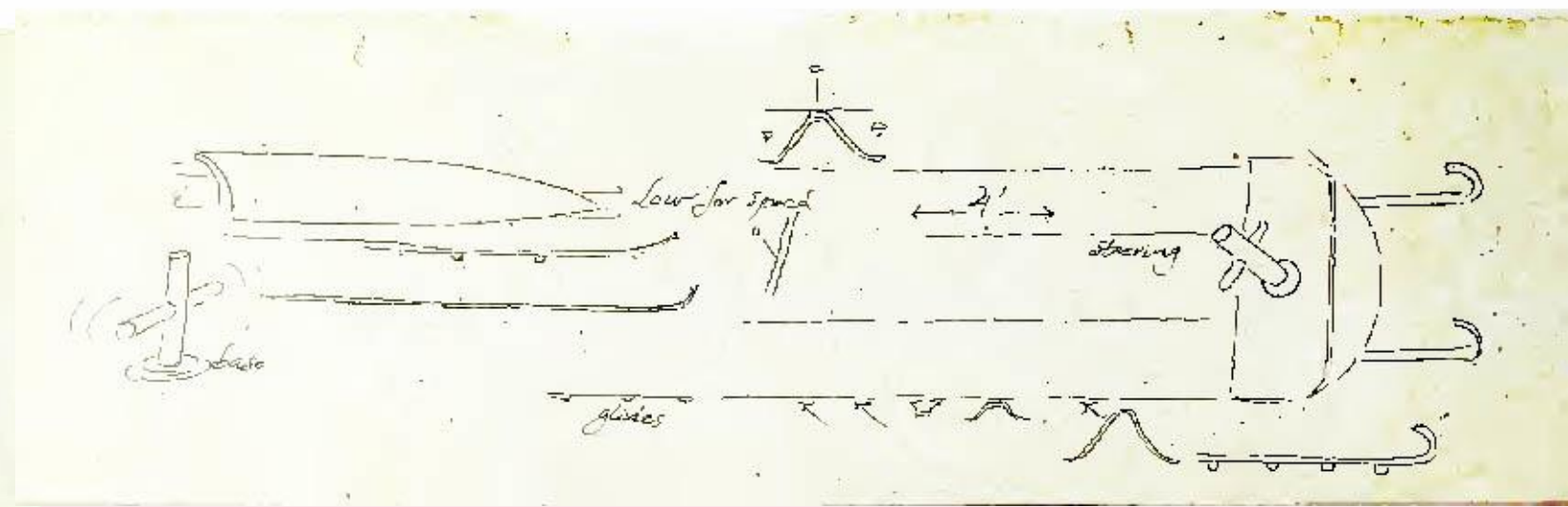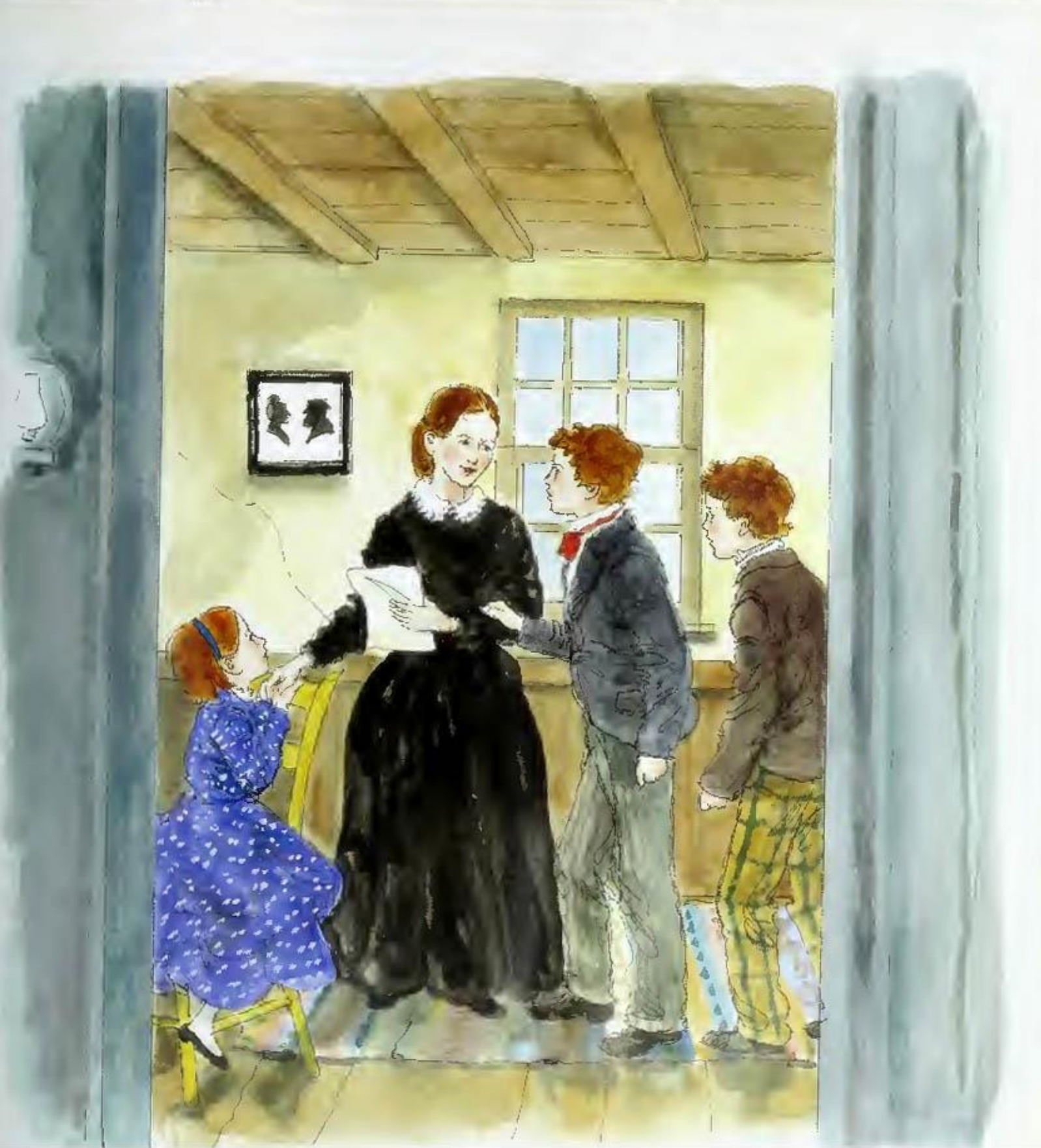
जब मैटी ग्यारह बरस की हुई माँ ने तीनों बच्चों को इकट्ठा किया और बोलीं, “मैंने सुना है कि मैनचैस्टर, न्यू हैम्पशर की एक कपड़ा मिल में हमें काम मिल सकता है। लड़के और मैं मिल में काम करेंगे और मैटी तब तक स्कूल जाएगी, जब तक वह बारह बरस की नहीं हो जाती। कम्पनी हमें रहने की जगह भी देगी।”

मैनचैस्टर ईटों से बना एक नया शहर था। क्योंकि पूरा परिवार दिन में तेरह घंटे काम करता था, मैटी को अकेलापन सताने लगा।
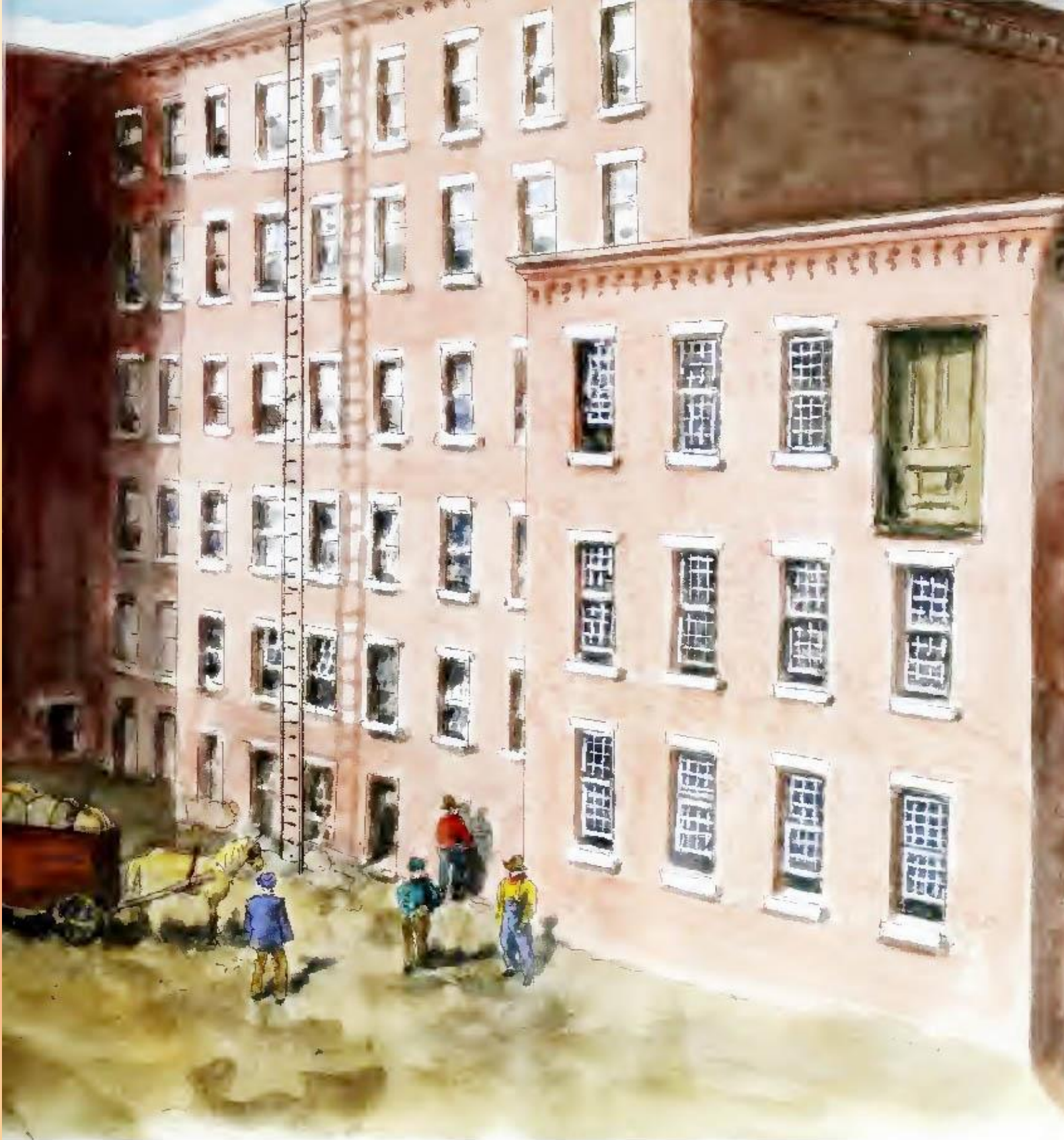
स्कूल से छूटने के बाद जब मैटी सबके घर लौटने का इंतज़ार करती, उसे मिल परिसर में छानबीन करना अच्छा लगता था। पर निरीक्षक उसे कताई और बुनाई वाले कमरों से भगा देते।

एक दिन उसने एक इमारत से ज़ोरदार आवाज़ें सुनीं। वह अन्दर घुस गई और देखा, कई पुरुष लोहे की एक विशाल मशीन बना रहे हैं। मैटी ने फ़ौरन अपनी कॉपी खोली और वह उस मशीन का चित्र बनाने लगी।

"क्या रास्ता भटक गई हो नन्ही?" एक आदमी ने पूछा।

"यह मशीन बनाने का कारखाना है ना?" मैटी ने पलट कर सवाल किया।

"हाँ, पर एक छोटी-सी लड़की को यहाँ क्या चाहिए?" उस व्यक्ति ने जानना चाहा।

"मुझे मशीनों से प्यार है!" मैटी ने बेहिचक जवाब दिया।

"यही लगता है," उस व्यक्ति ने कहा। "हमारे यहाँ अमूमन करघों की मरम्मत का काम हुआ करता है, पर हमें अब लोकोमोटिव (रेल इंजन) बनाने को कहा गया है।"

मैटी की आँखें चमक उठीं, "किसके लिए," उसने उत्सुकता से पूछा।

"रेलरोड के लिए। यह जनरल वॉशिंगटन है। यह न्यू यॉर्क की मध्य लाइनों पर रेल के डब्बों को खींचेगा।"

मैटी जिससे बतिया रही थी उस व्यक्ति का नाम मिस्टर बाल्डविन था। उन्होंने मैटी के हरेक सवाल का जवाब दिया। मैटी खुद को उस कारखाने में बड़ा ही सहज महसूस कर रही थी। उसने परिवार को कारखाने के बारे में बताया।

"इस सबका क्या हश्र होगा," माँ ने परेशान हो ठण्डी साँस छोड़ते कहा।

जब मैटी बारह साल की हुई वह भी कपड़ा मिल में काम करने जाने लगी। वह सुबह साढ़े चार की घंटी के साथ उठती और शाम साढ़े सात की घंटी के बाद घर लौटती। एक दिन एक करघे के कोने से एक शटल (बुनने की नलकी) सट्ट से निकली और काम कर रही एक लड़की के सिर से जा टकराई। घायल बच्ची का नाम रिबेका था। वह मैटी के परिवार के बगल में रहती थी।

मैटी मदद करने दौड़ी। "रास्ते से हटो!" निरीक्षक चिल्लाया। रिबेका को कारखाने से ले जाया गया। पर करघे जस के तस चलते रहे। बाकी लड़कियाँ इस कोशिश में जुटी रहीं कि धागा उनके हाथ से फिसल टूट न जाए। कुछ भी हो जाए कारखाने का उत्पादन कभी रुकता नहीं था। "भयंकर!" किसीने टिप्पणी की। "गड़बड़ इन मशीनों की ही है।"

काम के बाद मैटी परिवार के साथ घर लौटी। जो कारखाने में हुआ उस घटना पर वह लगातार सोचती रही। उसने शटल की कल्पना की, उसके मकसद के बारे में सोचा, वह गड़बड़ाया कैसे होगा इस पर सोचने लगी। करघा आखिर एक आविष्कार ही तो था, उसे सुधार कर ज़रूर बेहतर बनाया जा सकता था।
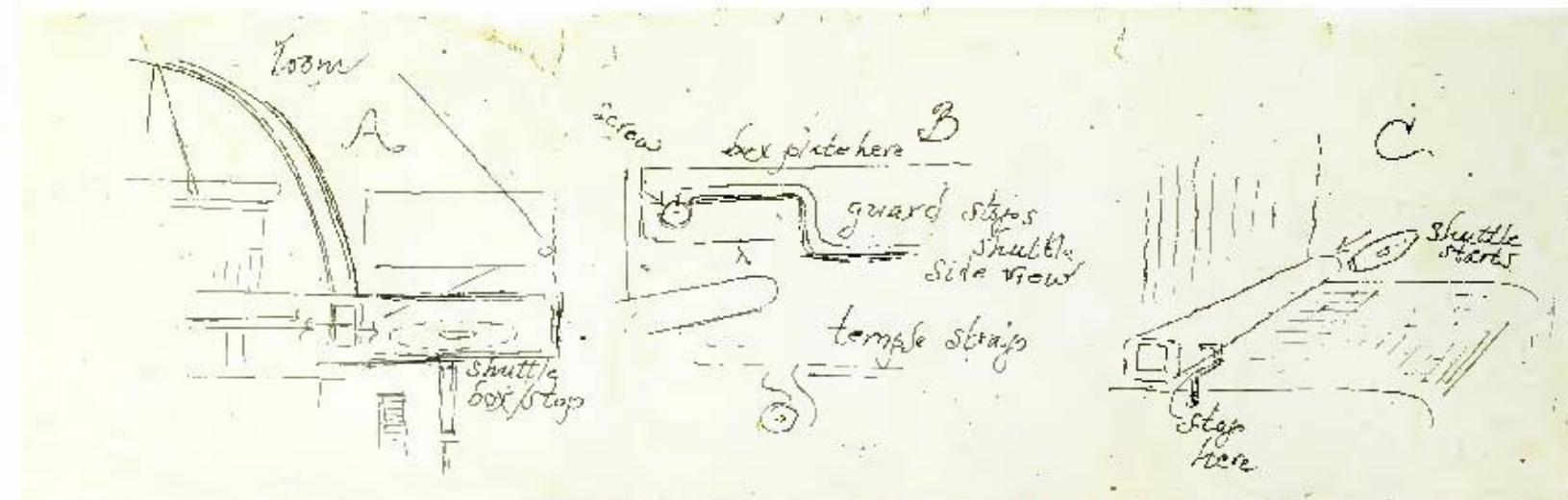
उस शाम सब रिबेका के घर जमा थे। सबको उसकी चिन्ता जो थी। वहाँ मैटी ने एक बुनकर को कहते सुना कि बुनाई के समय धागा अक्सर टूट जाता था और इस कारण शटल सटक कर एक मिसाइल तरह निकल जाता था। मैटी एक कोने में बैठ अपनी कॉपी में कुछ आँकती रही। अचानक एक ख़याल ने उसके दिमाग़ में आकार लिया। धातु से एक उपकरण बनाया जा सकता है जो शटल को अपने रास्ते से निकलने न दे। बात तो सरल थी। काश इस पर प्रयोग किया जा सकता!

मैटी ने अपनी कॉपी मिस्टर बाल्डविन को दिखाई। "अरे ये चित्र तो एक असली आविष्कारक के हैं," उन्होंने अचरज से कहा। "मुझे लगता है कि तुम्हारा समाधान सही है। मैं यह बॉस के पास ले जाऊंगा।" मुख्य इन्जीनियर बड़ा प्रभावित हुआ, उसने कपड़ा मिलों के मालिकों में से एक को चित्र दिखाए। कुछ सप्ताह गुज़रे। रिबेका की हालत कुछ बेहतर हुई। तब एक दिन कुछ कारीगर कारखाने में आए और उन्होंने मैनचैस्टर के कपड़ा मिलों के सभी करघों पर धातु से बने शटल रोकने के यंत्र लगा दिए।
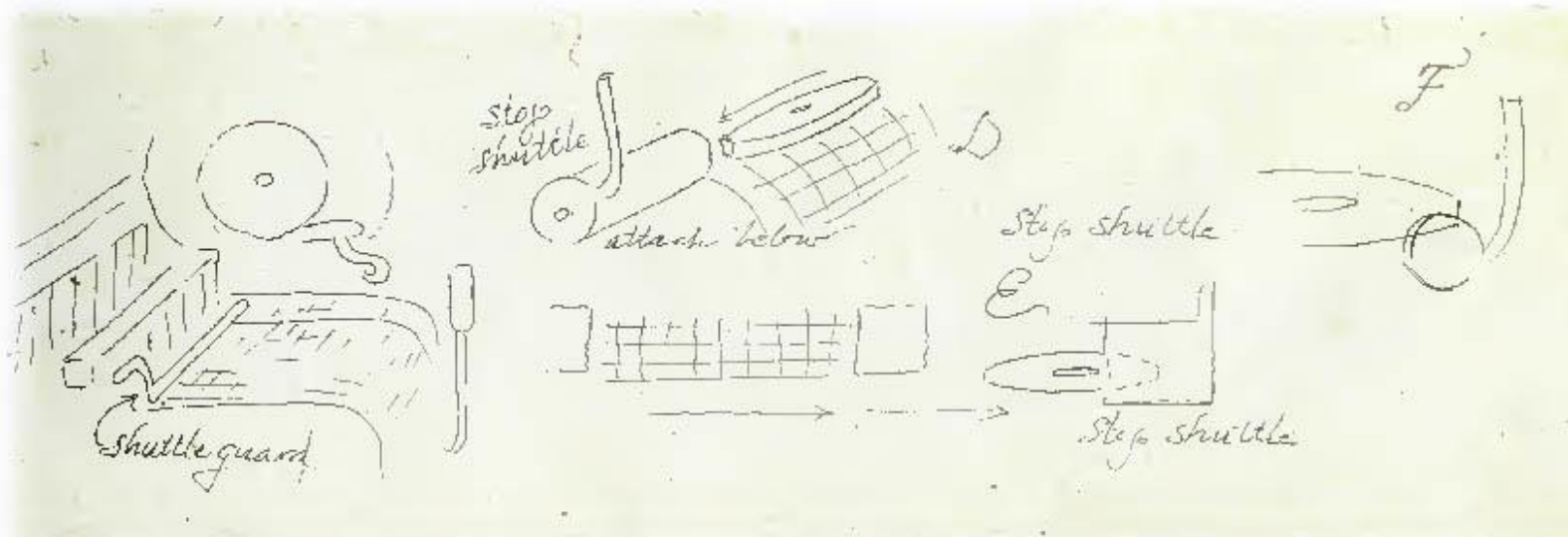
ये यंत्र ठीक उस तरह काम करते थे, जैसे मैटी ने कल्पना की थी। इस उपकरण के लगने के बाद करघे से छूट निकली किसी शटल से कोई घायल नहीं होने वाला था।

“ओह मैटी, मुझे तुम पर बेहद फ़क्र है!” उसकी माँ ने कहा।

मिस्टर बाल्डविन ने उसे बधाई दी। “तुम्हें अपने विचार का पेटेन्ट करवा लेना चाहिए,” उन्होंने सुझाव दिया।

“ये पेटेन्ट क्या होता है?” मैटी ने जानना चाहा।

उन्होंने मैटी को समझाया कि आविष्कारक अपने नए विचारों को सरकार के पास अपने नाम से पंजीकृत करवा लेते हैं, ताकि उन्हें कोई दूसरा चुरा न ले। पेटेन्ट मिल जाने के बाद आविष्कारक खुद उस यंत्र/उपकरण को बना सकता है। “पर मुझे नहीं लगता कि वे किसी छोटी लड़की को एक पेटेन्ट देंगे,” उन्होंने समझाने के बाद जोड़ा।

मैटी ने कपड़ा मिल में कुछ और वर्षों तक काम किया। पर तब कपास की कीमतें गिरीं और कपड़ा उत्पादन कम हो चला। “मैं अपने लिए बेहतर विकल्प तलाशना चाहती हूँ,” मैटी ने माँ से कहा। “मुझे तुम्हें जाने देना कतई अच्छा नहीं लगेगा,” उसकी माँ ने कहा। “पर मुझे लगता है कि तुम्हें जाना ही होगा।”

मैटी ने घर छोड़ा और कई अलग-अलग तरह के कारखानों में काम किया। तब नागरिक युद्ध छिड़ा। उसके समाप्त होने के बाद मैटी ने सुना कि स्प्रिंगफील्ड, मैसाच्युसेटस् में उसे काम मिल सकता है। यह कारखाना बड़ी मात्रा में कागज़ की थैलियों कर उत्पादन करता था, जो पहले हाथ से बनाई जाती थीं। उसकी मशीनें कागज़ के बड़े रोल से थैलियों को काटतीं, उन्हें मोड़तीं और तब उनके सिरों को गोंद से चिपका देतीं। पर ये थैलियाँ सीधी खड़ी नहीं होती थीं, इसका मतलब था कि परचून वाले को उनमें सामान डालते वक़्त थैली का मुँह खुला रखने के लिए एक हाथ का इस्तेमाल करना पड़ता था। इसके अलावा सामग्री भारी होने पर वे फट भी जाया करती थीं।

स्प्रिंगफील्ड में मैटी सैडी नाम की लड़की के साथ किराए के एक कमरे में रहती थी। सैडी जूतों के कारखाने में काम करती थी। थैलियों के कारखाने में काम करते हुए कुछ ही दिन गुज़रे होंगे कि किसीने ज़िक्र किया कि वह किसी इन्सान को जानता है जो एक बेहतर मशीन ईजाद करने के कोशिश कर रहा है। ऐसी मशीन जो चौकोर पेंदे वाली कागज़ की थैलियों को काटे और चिपका सके। मैटी को तब यह भी पता चला कि कई दूसरे लोग भी एक बेहतर मशीन बनाने पर काम कर रहे हैं।

मैटी ने तय किया कि उसे भी एक मशीन ईजाद करने की कोशिश करनी चाहिए। सो जिस मकान में वह रहती थी उसके तहख़ाने में उसने अपनी कार्यशाला बनाई और थैली बनाने वाली मशीन में जितने सुधार संभव थे, उन सबके चित्र आँकने शुरू किए। एक दिन सैडी यह देखने आई कि मैटी कर क्या रही है। "सोने का समय हो चुका है," उसने कहा। "तुम आख़िर कर क्या रही हो?" मैटी ने जवाब देने के पहले अपनी कॉपी उसके सामने कर दी जिसमें कुछ दर्ज था। "आविष्कार," उसने सैडी को बताया।
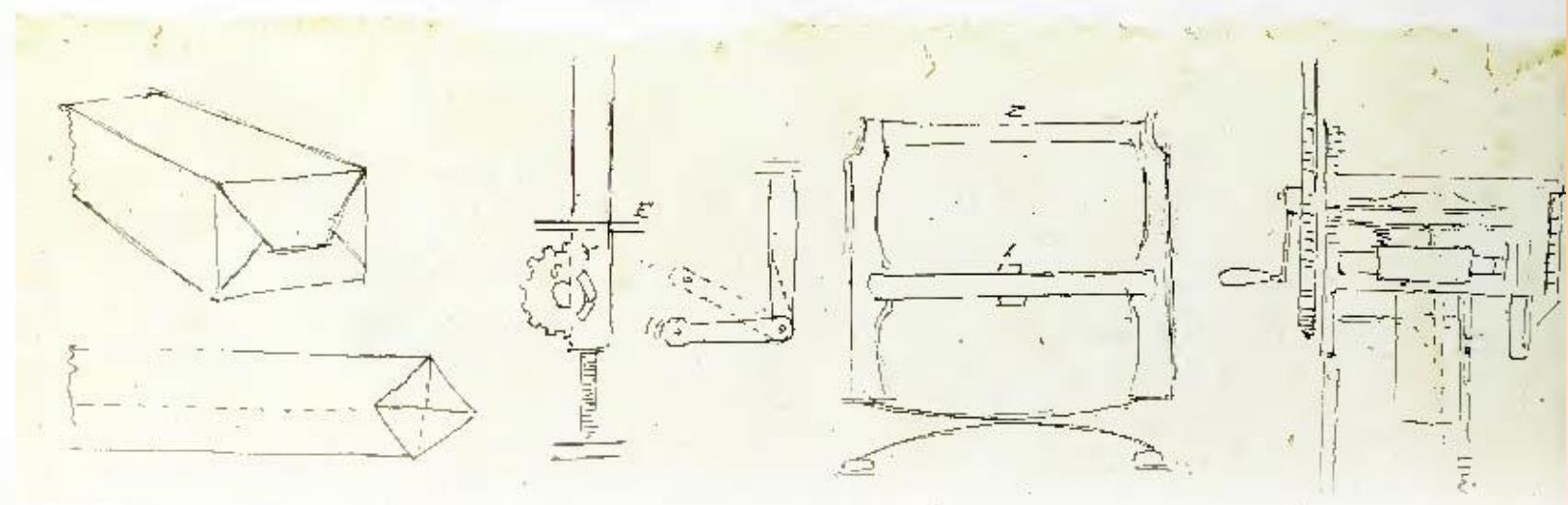
"मैं जितनी लड़कियों को जानती हूँ, तुम उन जैसी हो ही नहीं!" सैडी ने कहा। मैटी ने समझाया कि वह किस चीज़ पर काम कर रही है। इसके बाद सैडी अपनी नई सहेली कर आविष्कार की प्रगति देखती और उसके बारे में पूछती रहती। "काम कैसा चल रहा है?"

"देखते हैं!" मैटी जवाब में कहती।
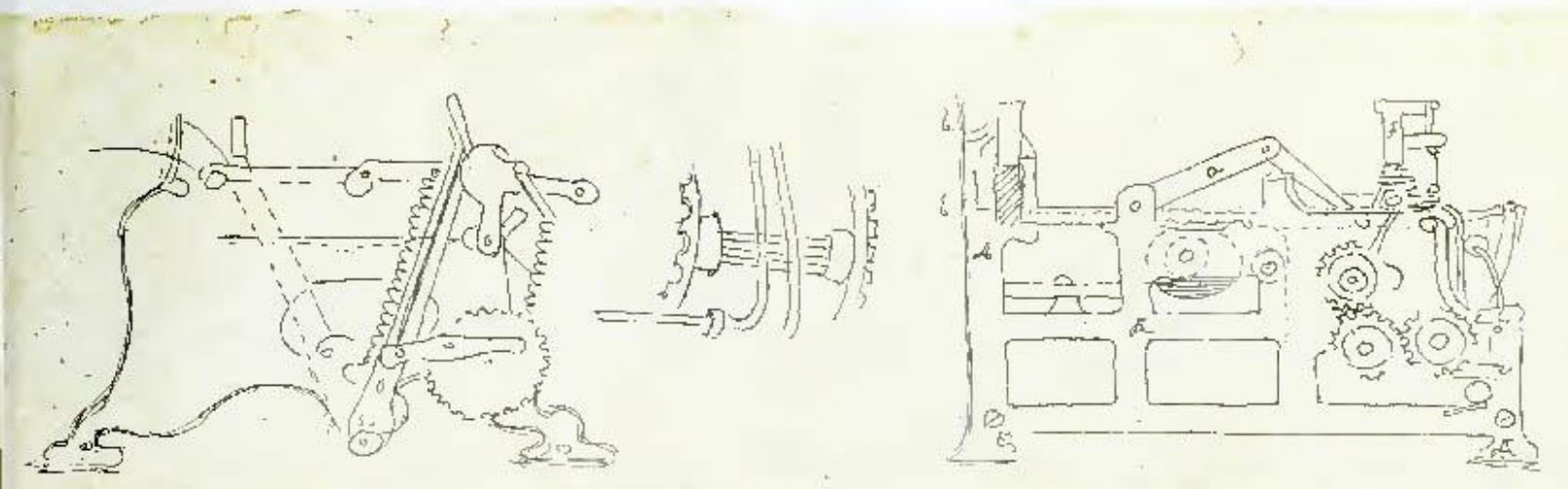
मैटी अपनी थैली मशीन पर लगातार काम करते रही। वह हरेक नए स्वरूप को पहले कागज़ में काटती, उसे जो कमियाँ लगती उन्हें सुधारती, और मशीन को बेहतर बनाने की कोशिश करती। लगता यह था कि मशीन को सुधारने का कोई अंत ही नहीं है। पर आख़िरकार वह दिन भी आया जब वह थैलियाँ बनाने की कोशिश कर सकती थी। मैटी ने अपने पिता के औज़ार बक्से का इस्तमाल कर लकड़ी से मशीन का प्रारूप बनाया।

क्या यह काम करेगा? जब पहली थैली निकली उसका कागज़ मशीन में फंस गया। मैटी ने समस्या पहचानी और उसे ठीक किया।

तब डरते-डरते मशीन फिर से शुरू की। कागज़ का रोल ठीक से अन्दर जाता रहा। और उसके आविष्कार से एक के बाद एक थैलियाँ बन कर निकलती रहीं।

अगले कुछ सप्ताहों में उसने कई हज़ार थैलियाँ बनाईं। हरेक का चौकोर पेंदा सपाट था, जिससे वे सीधी खड़ी रहतीं और उनमें बिना फाड़े सामान रखा जा सकता था।

''तुमने कर दिखाया,'' सैडी ने खुश होते हुए कहा।

''हाँ, सो तो है!'' मैटी सहमत हुई।

स्प्रिंगफील्ड में आविष्कारकों का एक क्लब बना हुआ था। मैटी उसकी बैठक में एक दिन पहुँची। उसने अपना परिचय दिया, बताया कि उसने एक मशीन बनाई है और उसका पेटेन्ट लेना चाहती है।

''बॉस्टन में एक उम्दा कारख़ाना है,'' एक आविष्कारक ने बताया। ''उनसे तुम लोहे का एक मूल प्रारूप बनवा लो, ताकि उसे पेटेन्ट दफ्तर में जमा करवा सको।''

जब मैटी सैडी को यह बताया, वह बोली, ''तुम अकेली ही बॉस्टन जाओगी?''

''जाना ही होगा,'' मैटी ने जवाब में कहा।

मैटी ने अपनी बचत में से कुछ राशि बॉस्टन में एक कमरा किराए पर लेने में खर्च की, ताकि वह मशीन की ढलाई और फिटिंग की निगहबानी कर सके। "मुझे लगता है कि यह विचार पैसे बनाने वाला है," मशीन बनाने वाले कारख़ाने का मुखिया बोला। "पर आपके पति खुद आकर काम की निगहबानी क्यों नहीं करते?"

"आविष्कारक मैं हूँ," मैटी ने जवाब दिया। "आपको इस हिस्से को फिर से ढलना पड़ेगा, क्योंकि यह मेरे नाप के हिसाब से नहीं बना है।"

एक दिन जब मैटी कारख़ाने पहुँची, एक आदमी उसे धकियाता बाहर निकला। उस वक़्त मैटी को वह सिर्फ़ एक बदतमीज़ इन्सान ही लगा। मैटी की मशीन को बनने में कुछ सप्ताह और लगे। तैयार हो जाने पर मैटी ने मशीन पर कागज़ का रोल चढ़ाया यह जानने कि मशीन से चौकोर पेंदे वाली थैलियाँ बनती भी हैं या नहीं। यह परीक्षा की घड़ी थी।

एक दोस्ताना कारीगर की मदद से मैटी अपने आविष्कार को ले पेटेन्ट दफ्तर पहुँची। वहाँ उसने कागज़ी कार्रवाई पूरी की और क्लर्क बाबू को कागज़ात थमाए। बाबू ने सारे कागज़ पढ़े और यह कहते वापस लौटा दिए, "मिस इसका पेटेन्ट तो पिछले सप्ताह हो चुका है।" मैटी मुँह फाड़े देखती रह गई। उसने रेकॉर्ड में यह दर्ज पाया कि किसी चार्ल्स एफ. एनन ने मशीन का पूर्व-रूप जमा करवा उसी आविष्कार का पेटेन्ट ले लिया है।

"अरे यह तो वही आदमी है जो हमारे कारख़ाने में आया था," साथ आए कारीगर ने कहा। "लगता है उसने आपका विचार चुरा लिया है।"

मैटी बिलकुल हताश हो गई।

क्लर्क बाबू ने सुझाव दिया, "यह तो अदालत का मामला लगता है।"

"अदालत?" मैटी ने सवाल किया।

"अगर आप न्यायाधीश के सामने यह सिद्ध कर दें कि विचार आपका है, तो पेटेन्ट आपको मिल जाएगा।"

मैटी को एक वक़ील करना पड़ा। उसकी बाकी बचत चुक गई। वकील ने जानना चाहा कि क्या मैटी के पास वह सब दर्ज है जो काम उसने किया था। मैटी ने हाँ कहा। वकील सलाह दी कि सैडी को गवाही देने बुलाया जाए। मैटी को स्प्रिंगफील्ड जा सैडी को मनाना पड़ा कि वह बॉस्टन आए।

मिस्टर एनन कटघरे में खड़े हुए और बोले कि आविष्कार उनका ही है क्योंकि, "यह संभव ही नहीं है कि मिस नाइट मशीनी पेचीदगियों को समझती होंगी। "

जब सैडी गवाही देने खड़ी हुई वह इस कदर सहमी हुई थी कि वह फुसफुसा कर बोल रही थी। "यह गवाह तो मिस नाइट से भी अधिक अकुशल है," मिस्टर एनन के वक़ील ने ताना कसा। मैटी के वकील ने तब सैडी से पूछा कि क्या उसने कभी मैटी को उसके आविष्कार पर काम करते देखा है। "जी हाँ," सैडी ने हौले से कहा। "कब?" वकील ने सवाल किया। "हर रात पिछले दो सालों से," सैडी ने सच्चाई बयान की।

मैटी के वकील ने तब मैटी से कहा कि वह अपनी कॉपी में दर्ज अपने चित्र और कागज़ के काटे हुए अपने पैटर्न न्यायाधीश को दिखाए। न्यायाधीश ने सब सबूत ध्यान से देखे।

"मुझे आपके विचार की मौलिकता पर आपको बधाई देनी होगी," न्यायाधीश ने आख़िरकार कहा। "ये सबूत और गवाह के बयान सिद्ध करते हैं कि यह आविष्कार मिस नाइट का ही है। मिस्टर एनन इतिहास में हमेशा बदनाम रहेंगे।"

मैटी खुशी से फूली न समाई। सैडी ने उसे बधाई दी।

Drawings from an 1871 patent showing views of Margaret Knight's paper-bag machine.
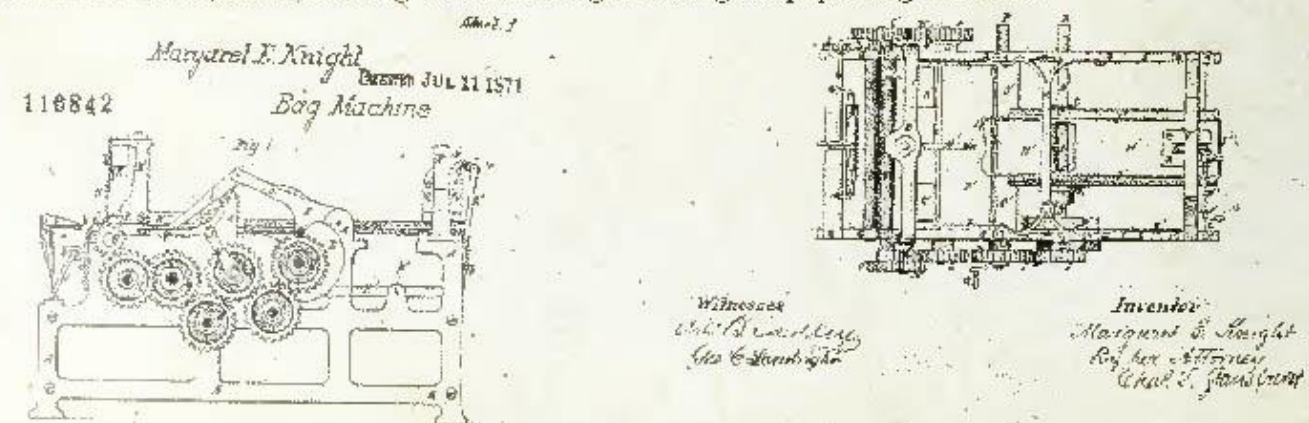
कागज़ की थैलियों का उत्पादन करने वाली एक फर्म का प्रतिनिधि फैसले के वक़्त वहाँ उपस्थित था। उसने मैटी के सामने 50,000 डॉलर का प्रस्ताव रखा कि मैटी अपने आविष्कार को फ़ौरन उसकी फर्म को बेच दे। मैटी बिलकुल भी हिचकिचाई नहीं, उसने कहा, "जी नहीं, शुक्रिया! मैं खुद व्यवसाय में उतरना चाहती हूँ।

मैटी ने मशीन में और सुधार किए। तब एक ओर पेटेन्ट का आवेदन किया। एक साझेदार के साथ मिल कर मैटी ने ईस्टर्न पेपर बैग कम्पनी नाम से काम शुरू किया। मैटी जीवन भर एक पेशेवर आविष्कारक बनी रहीं। जब छिहत्तर वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हुई, अखबारों ने उनकी मृत्यु का समाचार छापते वक़्त उनका ज़िक्र "लेडी एडिसन" कह किया।

मैटी की ईजाद की गई कागज़ की थैलियों का हम आज तक उपयोग कर रहे हैं।

लेखिका की कलम से

मार्गरेट ई. नाइट के जीवन काल में, 1838 से 1914 तक, औद्योगिक क्रान्ति व अमरीका के विस्तार ने नए आविष्कारों की अभूतपूर्व लहर लाने के साथ, शरीफ़ घरों की महिलाओं पर तमाम बंधन भी लगाए। स्त्रियों से यह अपेक्षा की जाती थी कि वे खुद को घरेलू क्षेत्र में समर्पित करेंगी। मैटी को ताउम्र इस धारणा का सामना करना पड़ा कि औरतों का दिमाग़ इतना विलक्षण हो ही नहीं सकता कि वे आविष्कार कर सकें। मैटी एक आविष्कारक, वह भी एक पेशेवर आविष्कारक बनीं, जिनके नाम पर 22 पेटेन्ट और 90 से भी अधिक मौलिक आविष्कार दर्ज हुए। उन्होंने अपने युग की धारणाओं को न केवल ललकारा बल्की एक सशक्त उदाहरण भी पेश किया। उन्होंने केवल आरंभिक शिक्षा ही पाई थी, पर इसने उन्हें रोका नहीं। उनके काम के लिए उन्हें जिस युक्तिपरक, छानबीन करने और कल्पना कर पाने वाले विलक्षण और दृढ़ दिमाग़ की ज़रूरत थी वह उनके पास था। वे किसी भी विचार को साकार कैसे किया जाता है यह बख़ूबी समझती थीं, फिर चाहे वे उसके पीछे का सिद्धान्त न भी जानती हों। जिस समय मैनचैस्टर के मशीन कारख़ाने में उनका परिचय मशीनों से हुआ, तब से ही वे मशीनी अवधारणाओं की कल्पना करने लगीं जो विकल्पों, मिश्रणों ओर सुधारों की अनुमति देते थे।

2 दिसम्बर 1872 के वुमन्स् जर्नल ने उन पर एक आलेख छापा, जो मैटी के बचपन के बारे में उनके विचार प्रस्तुत करता हैः "बॉस्टन की एक मिस नाइट ने एक मशीन का आविष्कार किया है जो कागज़ की थैलियाँ बनाती है। उन्होंने अपनी निगहबानी में चिकोपी में ऐसी कई मशीनों से उत्पादन आरंभ किया। शुरुआत में कारखाने के कारीगर उनकी मशीनी काबलियत को लेकर शंकालु थे। पर हर दिन उनके बीच काम कर, ग़लतियाँ पकड़ और उन्हें सुधार कर उन्होंने इस ग़लतफ़हमी को दूर कर दिया। उन्होंने अपने साक्षात्कार में कहाः "यह तो अपनी प्रकृति के अनुरूप चलना ही था। मुझे बचपन में उन चीज़ों का शौक ही नहीं था जो अमूमन लड़कियों को होता है...मेरी सहेलियों को अचरज होता था। मुझे मर्दानी लड़की कहा जाता था; पर मुझ पर इसका कोई असर न पड़ता। कभी-कभी मैं यह अफ़सोस करती कि मैं दूसरी लड़कियों जैसी क्यों नहीं हूँ। पर शुक्र है कि मैंने यह तय कर लिया कि इसका मैं कुछ नहीं कर सकती...और मैंने अपने औज़ारों में सहारा तलाशा...मुझे केवल यह दुख था कि एक लड़के के रूप में मुझे जो मौके मिल सकते थे वे मुझे नही मिले। पर मुझे हमेशा नियमित रूप से काम मिलता रहा।"

एक पेशेवर के रूप में जूझती मैटी कभी अमीर नहीं बन सकीं, पर उन्होंने तमाम दूसरी चीज़ों के अलावा खिड़कियों की चौखटों, गाड़ी के इंजनों, और कागज़ की थैलियों में आ रही समस्याओं के समाधान तलाशे। बारह वर्ष की उम्र में उन्होंने जिस करघा सुरक्षा उपकरण को ईजाद किया था, उसके स्वरूप की सटीक जानकारी नहीं है। 1913 के न्यू यॉर्क टाइम्स के एक लेख में उन्होंने इसे 'शटल कवर' कहा था। इतिहासकार अक्सर दावा करते हैं कि यह या तो 'शटल को रोकने का उपकरण' था या 'काम बन्द' करने का। दुर्भाग्य से किसीको यह पता नहीं है कि उनका यह आविष्कार क्या था और किस तरह काम करता था। इस संबंध मे कोई रेकॉर्ड भी प्रकाश में नहीं आया है।